Page I

BA I Psychology (H)
Paper I, General Psychology.

Topic- Theory of emotion (Cannon-Bard)

कैनन तथा बार्ड (Cannon and Bard) ने जेम्स-लांजे सिद्धान्त को गलत बताया तथा अपने अध्ययनों के आधार पर एक अलग सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उनके सिद्धान्त को हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त (Hypothalamic theory) के नाम से पुकारा जाता है। कैनन तथा बार्ड का कहना है कि संवेगात्मक व्यवहार को संवेगात्मक अनुभूति का कारण मानना गलत है साथ ही, जैसा कि जेम्स और लांजे ने माना है, संवेग में केवल स्वतः संचालित स्नायुमण्डल से सधानुभूतिक अंश और वृहत मस्तिष्क का ही प्रमुख स्थान नहीं है बल्कि हाइपोथैलेमस का सर्वाधिक महत्व है। उनके अनुसार हाइपोथैलेमस ही संवेग का नियंत्रण करता है। इसे हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त की संज्ञा दी जाती है। कैनन तथा बार्ड के अनुसार, संवेग की क्रिया में सबसे पहले संवेगात्मक परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण होता है जिसके फलस्वरूप हाइपोथैलेमस उत्तेजित होता है। इसके बाद हाइपोथैलेमस से स्नायुप्रवाह निकलकर एक ही समय में वृहत मस्तिष्कीय वल्क तथा अंतरावयव एवं मांसपेशियों में जाता है। फलस्वरूप एक ही समय प्राणी में

संवेगात्मक अनुभूति और संवेगात्मक व्यवहार दोनों होते हैं।

हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त के वर्णन से स्पष्ट है कि इस सिद्धान्त के अनुसार हाइपोथैलमस से निकलकर स्नायु-प्रवाह एक ही समय वृहत मस्तिष्क तथा अंतरावयव एवं धारीदार मांसपेशियों में जाते हैं जिनके फलस्वरूप संवेगात्मक अनुभव और संवेगात्मक व्यवहार दोनों एक ही साथ होते हैं। इस प्रकार जेम्स लांग सिद्धान्त के विरुद्ध आरोपित आलोचनायें इस सिद्धान्त पर लागू नहीं होतीं। उदाहरण के लिए, कैनन तथा शेरिंगटन द्वारा कुत्ते एवं बिल्लियों पर किए गए प्रयोग में देखा गया कि जब अंतरावयव और वृहत मस्तिष्कीय वल्क के बीच संबंध स्थापित करने वाली सहानुभूति स्नायु को काट दिया गया तब भी कुत्ते और बिल्ली में संवेगात्मक अनुभव उत्पन्न हुआ। इस तथ्य की व्याख्या करने में जेम्स लांग का सिद्धान्त सफल नहीं हुआ। परन्तु हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त द्वारा इसकी व्याख्या हो जाती है। इस सिद्धान्त के अनुसार हाइपोथैलमस में उत्पन्न स्नायु-प्रवाह एक ही साथ अंतरावयव, धारीदार मांसपेशियों एवं वृहत मस्तिष्कीय वल्क की ओर संवेगात्मक प्रतिक्रिया के प्रकाशीकरण के साथ ही जाते हैं। हाइपोथैलेमिक ~~सिद्धान्त~~ सिद्धान्त के अनुसार अंतरावयव और वृहत् मस्तिष्क का संबंध विच्छेद हो जाने पर भी

हाइपोथैलेमस और मस्तिष्क का संबंध कैसा रहा है

हाइपोथैलेमस सिद्धान्त संवेग उत्पत्ति में अंतस्थलमय के महत्व को सीमित मानता है। यह सिद्धान्त बताता है कि मुक्ति संवेग की उत्पत्ति में हाइपोथैलेमस का ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है और हाइपोथैलेमस के स्नायु-प्रवाह का मस्तिष्क में पहुंचने से भी कुछ भी समय नहीं लगता, इसलिए संवेगात्मक अनुभव आविर्भाव हो जाता है।

यह सही है कि कैनन-बार्ड का हाइपोथैलेमस सिद्धान्त जेम्स-लांजे सिद्धान्त की अनेक आलोचनाओं का हल करने में सफल है। फिर भी यह सिद्धान्त बिलकुल दोषरहित है। इस सिद्धान्त में भी कुछ त्रुटियाँ हैं जो निम्नलिखित हैं।

(1) यह सिद्धान्त संवेग की उत्पत्ति में हाइपोथैलेमस का ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान मानता है जो सही नहीं है वास्तविकता तो यह है कि हाइपोथैलेमस के अतिरिक्त स्नायु मंडल के अन्य भागों का भी संवेग में महत्वपूर्ण स्थान है। इस बात की पुष्टि इससे हो जाती है कि हाइपोथैलेमस को उत्तेजित करने के पश्चात फलस्वरूप प्राणी में जो संवेगात्मक व्यवहार उत्पन्न होते हैं वे स्वाभाविक रूप से उत्पन्न संवेगात्मक व्यवहार से भिन्न होते हैं।

कृत्रिम रूप से हाइपोथैलेमस को उत्तेजित करने के फलस्वरूप उत्पन्न संवेगात्मक व्यवहार

स्वाभाविक रूप से उपयुक्त संवेगात्मक व्यवहार की अपेक्षा (1) क्षणिक होते हैं (2) अधिक दृढ़ (3) अभियोजन की क्षमता में कमी (4) अधिक नियंत्रित (5) किसी परिस्थिति विशेष की ओर कम उन्मुख होते हैं

(2) कैनन-बार्ड ने अपने सिद्धान्त में संवेग की उत्पत्ति का मुख्य स्थल हाइपोथैलेमस को माना है, संवेगों से उत्पन्न तनाव को देर तक बनाए में हाइपोथैलेमस समर्थ नहीं है।

अतः उपर्युक्त त्रुटियों के कारण कैनन-बार्ड सिद्धान्त को भी संवेग का एक सर्वोपरि सिद्धान्त नहीं माना जा सकता है।

Kumar Patel
Maharaja College, Ara